श्लोक नं॰ 29

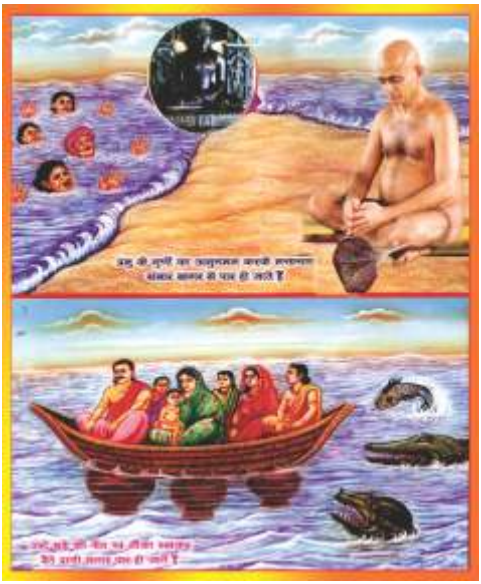

प्रभु पार लगाने वाले

त्वं नाथ! जन्म-जलधेर्विपराङ्मुखोऽपि
यत्तारयस्य सुमतो निज-पृष्ठ-लग्नान्।
युक्तं हि पार्थिव-नृपस्य सतस्तवैव
चित्रं विभो! यदसि कर्मविपाकशून्यः॥ 29॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

भवसागर के पार गए फिर भी तुम तार रहे।
शरणागत भवि जीवों के प्रभु तारणहार रहे॥
पका हुआ माटी का उल्टा घट तैराता है।
कर्मोदय के पाक रहित प्रभु नाम तिराता है॥
अचरज है प्रभु कर्म शून्य होकर भी तारक हो।
नाम जपे जो श्रद्धा से उनके दुखहारक हो॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 29॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणबंभयारिणं।

स्व्युपसर्गसहिष्णून्, घोरगुणब्रह्मचारिणः।
यजेऽहं परया भक्त्या,नत्वा तद्गुणसिद्धये ॥ 29॥

ॐ ह्रीं अर्हं घोरगुणब्रह्मचारिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

दोहा

1. **त्वं पार्श्वं तीर्थङ्करं, नमूँ अनन्तों बार।**
करूँ अर्चना आपकी, पाना है शिव द्वार॥ 1569॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **नाम मन्त्र का जाप भी, कर देता भव पार।**
वामानन्दन पार्श्व जिन, त्रिभुवन मङ्गलकार॥ 1570॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **थलपति आकर पूजता, दिव्य द्रव्य ले साथ।**
शिवपद की आशा लिए,झुका-झुका कर माथ॥ 1571॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **जन्मोत्सव में इन्द्र भी, करता ताण्डव नृत्य।**
कहता है वह भक्ति से, नाथ आप कृतकृत्य॥ 1572॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **मरण सुनिश्चित जीव का, जब तक रहे विभाव।**
जन्म-मरण का नाश कर, पाऊँ सिद्ध स्वभाव॥ 1573॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **जगमग ज्योति ज्ञान की, नष्ट कभी ना होय।**
पार्श्वप्रभु की भक्ति ही, सब विभाव मल खोय॥ 1574॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **लहराकर ध्वज गा रहा, प्रभु का यश चउ ओर।**
करो भव्य आराधना, पाओ भवदधि छोर॥ 1575॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. विधेर्विपाको मुक्त हैं, पार्श्वनाथ जिनराज।
त्रिविध विधिमल क्षय किए, नमूँ मुक्ती के काज॥ 1576॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धेर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. विशेष जिनवर रूप है, जीते सर्व विकार।
दर्शन कर मन शान्त हो, होता हर्ष अपार॥ 1577॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. पराधीन होकर सहा, दु:ख अनन्तानन्त।
हो जाऊँ स्वाधीन कब, यही भाव जिनचन्द्र॥ 1578॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. सुराङ्गनाएँ गा रहीं, भक्ति भरे नित गीत।
करना प्रभु की भक्ति ही, भक्त जनों की रीत॥ 1579॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'राङ्ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. मुनीश प्रभु के ध्यान में, हो जाते हैं लीन।
जिन से निज का दर्श कर, करे कर्म को क्षीण॥ 1580॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. खो जाते हैं स्वात्म में, शुक्लध्यान में सन्त।
चार घातिया नाश कर, हो जाते अरहन्त॥ 1581॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'खो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. एकोऽपि शुद्धात्मा, अनेक गुण संयुक्त।
यही भक्त की प्रार्थना, करिए भव से मुक्त॥ 1582॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. यत्न करें वे हैं यति, कहते पार्श्व जिनेश।
करूँ मुक्ती का यत्न मैं, ऐसा भाव हमेश॥ 1583॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. ताल बजाकर कर रहे, सुर-नर अर्चन नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, सिद्धि का साम्राज्य॥ 1584॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. रक्षित जो जिनधर्म से, कर्म नहीं दुख देय।
श्री जिनवर का ध्यान कर, पा लेता वह ध्येय॥ 1585॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. यहाँ-वहाँ कुछ सुख नहीं, स्वातम में सुख जान।
आत्म प्रतीति तुम करो, कहें प्रभो गुणखान॥ 1586॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. उपास्य हो प्रभु आप ही, उपासना कर धन्य।
भक्त उपासक आपका, नमूँ-नमूँ जगवन्द्य॥ 1587॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. सुन्दर मूरत आपकी, दर्शन कर आनन्द।
कब आवे वह शुभ घड़ी, चलूँ आपके पन्थ॥ 1588॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. मस्तक झुकना सरल है, कठिन समर्पण भाव।
बिना झुके मन मोक्ष ना, कहें पार्श्व जिनराज॥ 1589॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. तोसों प्रभु मेरी बनी, जग से कुछ ना प्रीत।
स्वारथ का संसार सब, निःस्वारथ प्रभु मीत॥ 1590॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. निज निधि पाई दर्शकर, हुआ स्वयं का भान।
परदृष्टि को छोड़कर, हुई स्वात्म पहचान॥ 1591॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. जयतु जिनशासन सदा, जयवन्तों जिनदेव।
नमूँ अनन्तों बार मैं, चरणों में सिर टेक॥ 1592॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. पृथ्वीतल पर आपसा, और न कोई श्रेष्ठ।
जगत जीव सामान्य हैं, जिनवर आप विशेष॥ 1593॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. वरिष्ठ हो प्रभु विश्व में, जग में आप महान।
वन्दन मम स्वीकारिए, पार्श्वनाथ भगवान॥ 1594॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष्ठ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. लग्न किया प्रभु आपने, मुक्तीवधू के सङ्ग।
पहुँच गए शिवमहल में, पाते परमानन्द॥ 1595॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लग्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. जिनान् जितारति सभी, जीती सर्व कषाय।
विजयी पारसनाथ को, झुक-झुक शीश नवाय॥ 1596॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. युक्ति पूर्वक भक्ति हो, मुक्ती निश्चित पाय।
भक्त अनुभव कर रहा, जिनभक्ति सुखदाय॥ 1597॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'युक्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. तं पार्श्वं वन्दाम्यहं, तीन योग से आज।
और नहीं कुछ चाह है, पाऊँ शिवपद राज॥ 1598॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. हितङ्करी वाणी प्रभो, नित मम हृदय समाय।
करूँ स्वात्म कल्याण मैं, यही भावना भाय॥ 1599॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. पार्श्व नाम प्यारा लगे, बाल वृद्ध को नित्य।
रटने से प्रभु नाम नित, होता आत्म पवित्र॥ 1600॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पार्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. थिरक-थिरक कर नाचते, सुरगण प्रभु समीप।
पूजन करते भाव से, पाते सौख्य अतीव॥ 1601॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. वस्तु परिणमन से सहित, गुण पर्यय संयुक्त।
सत् लक्षण है द्रव्य का, आगम वाक्य प्रयुक्त॥ 1602॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. नृप हो या निर्धन सभी, पूजें पारसनाथ।
बिन माँगे सब कुछ मिले, टल जाते सन्ताप॥ 1603॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. परमोत्सव मुझको लगा, विधान करके आज।
जग आकर्षण तज सभी, करूँ स्वयं पर राज॥ 1604॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. रहस्य जानूँ कर्म का, धारूँ समता भाव।
जैनागम कहता प्रभो, भवदधि तारक नाव॥ 1605॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. सरोज खिलते सूर्य से, प्रकाश को जब पाय।
जिनरवि की पा सन्निधि, भव्य कमल विकसाय॥ 1606॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. तस्कर मालिक से डरे, कर्म आपसे नाथ।
निर्मल होने को नमूँ, धरूँ चरण में माथ॥ 1607॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. तरह-तरह की व्याधियाँ, भोगूँ मैं दिन-रात।
जन्म-जरामृत व्याधि क्षय, करिए पारसनाथ॥ 1608॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. वैभव शाश्वत पा लिया, सिद्धमहल में वास।
मुझको नाथ बुलाइए, रखिए अपने पास॥ 1609॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वै' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. वर्धमान तीर्थेश जिन, हुए आपके बाद।
पार्श्वप्रभु को मैं करूँ, श्वास-श्वास में याद॥ 1610॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. चिन्मय चिन्तामणि प्रभो, प्रकटाया चिद्रूप।
नमन करूँ त्रय योग से, तीन लोक के भूप॥ 1611॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. शास्त्रं देवं गुरुवरं, शिवसुख कारण जान।
धर्म रहित मानव जनम, है तिर्यञ्च समान॥ 1612॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्रं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. विमान लेकर देवगण, आए शीघ्र समीप।
करें प्रभो आराधना, भक्तों की यह रीत॥ 1613॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. भोजन करता बाद में, प्रथम भजन कर भक्त।
लाख कार्य को छोड़कर, हो जिनगुण अनुरक्त॥ 1614॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. यथार्थ वस्तु स्वरूप को, जिनवाणी से जान।
प्रभु-भक्ति कर भक्त बन, आप बने भगवान॥ 1615॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. दर आकर जिनमूर्ति लख, दिखते निज के दोष।
निज सम्मुख हो दृष्टि तो, प्रकट होय गुण कोष॥ 1616॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. सिद्धायतनों को नमूँ, सिद्धदशा के काज।
मुझे बुला लो पास में, हे प्रभु पारसनाथ॥ 1617॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. कर्त्ता जो होगा वही, फल का भोक्ता होय।
यही कर्म सिद्धान्त है, जो जाने विधि धोय॥ 1618॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. मति से ही गति सुधरती, कहते हैं जिनदेव।
यतिपति ऋषि मुनि की सदा, सङ्गति कर अतएव॥ 1619॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. विरक्त होकर जगत से, हुए प्रभु जी मुक्त।
विभाव भाव मिटा दिया, स्वभाव से संयुक्त॥ 1620॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. पाते अक्षय-धाम वे, जो लेते प्रभु नाम।
जिनवच पर चल दे अगर, पहुँचे सिद्धिधाम॥ 1621॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. कल-कल करता जी रहा, पाया दुःख अपार।
कर मन से प्रभु-भक्ति तो, छूटे सब संसार॥ 1622॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. शून्य रहा निज सौख्य से, भव-भव भटका नाथ।
शरण पड़ा अब आपकी, मेटो सब सन्ताप॥ 1623॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शून्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. प्रायः करता भक्ति मैं, किन्तु न मन थिर होय।
अतः क्रिया निष्फल रही, फल ना पाया कोय॥ 1624॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

कर्म विपाक विमुक्त जिन, भवदधि तारक आप।
चढ़ा रहा पूर्णार्घ्य मैं, हो जाऊँ निष्पाप॥ 29॥

ॐ ह्रीं श्रीं निजपृष्ठलग्नभवतारकाय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

श्लोक नं॰ 30

विरोधाभास अलंकार में स्तुति

विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वम्
किंवाऽक्षर - प्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश।
अज्ञानवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्व-विकासहेतुः॥30॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

तीन लोक के स्वामी होकर दुर्गत कहलाते।
हो अक्षर अविनाशी पर तुमको ना लिख पाते॥
केवलज्ञानी होकर भी अज्ञानवान स्वामी।
अज्ञानी की रक्षा करते नमूँ पूर्णज्ञानी॥
नन्त अर्थ इक साथ ज्ञान में स्पष्ट झलकते हैं।
अश्वसेन नन्दन को सविनय वन्दन करते हैं॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥30॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं।

आमर्द्धीनामसंस्पर्द्धीन्, कृत्स्नरुग्नाशकान् नृणाम्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥30॥

ॐ ह्रीं अर्हं आमर्शौषधर्द्धिप्राप्तेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

अर्द्ध ज्ञानोदय छन्द

1. **वि**भोर होकर नाथ आपकी, आराधन जो करता है।
कर्मों की विपरीत दशा में, साम्य भाव वह धरता है॥ 1625॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **श्वे**त वस्त्र से कुछ ना होता, यदि भावना स्वच्छ नहीं।
मात्र द्रव्य का मूल्य नहीं कुछ, भाव शुद्धि का मूल्य सही॥ 1626॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श्वे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **श्व**भ्र सिन्धु अर्थात् नरक में, जाकर अति दुख पाया है।
तीव्र पुण्य का उदय हुआ अब, भक्त शरण तव आया है॥ 1627॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **रो**गी निरोग हो जाता जब, समवसरण में आता है।
रोम-रोम पुलकित होता तब, कर्म बन्ध कट जाता है॥ 1628॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **को**ऽ**पि** सुर-नर वृहस्पति भी, प्रभु गुण को ना गा सकता।
बुद्धिमान भी निज रसना से, अनन्त गुण ना गा सकता॥ 1629॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **ज**न्म समय से तीन ज्ञान के, धारक आप हुए स्वामी।
दीक्षा लेकर चार ज्ञानधर, अन्त हुए केवलज्ञानी॥ 1630॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **न**ग्न दिगम्बर वेश धारकर, शिवललना का वरण किया।
सर्व विकार विनाशे उनने, जिनने प्रभु का शरण लिया॥ 1631॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. पारस प्रभु का आश्रय पाकर, प्राणी होता पावन है।
वीतरागता की यह महिमा, गाता सारा जन-जन है॥ 1632॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. लगन लगी है प्रभु-भक्ति की, मुक्ती पाना लक्ष्य रहा।
किन्तु नहीं वह तपो साधना, सिद्धि की सामर्थ्य कहाँ॥ 1633॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. कस-कस करके दुष्कर्मों ने,मुझ पर पल-पल वार किया।
शरण आपकी जब मैं आया, पापों से प्रभु तार दिया॥ 1634॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. दुर्जन को जिनवर की भक्ति, मन से नहीं सुहाती है।
सज्जन को प्रभु के दर्शन की, मन में प्यास सताती है॥ 1635॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दुर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. गति सुधरे जब मति सुधरती, मति सङ्गति से ही सुधरे।
अतः करो सद्भक्त समागम, इससे निज आतम निखरे॥ 1636॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. तस्कर भी आतम गुणधन को, कभी नहीं हर सकता है।
अनन्त गुणधन सभी चेतना, जैनागम यह कहता है॥ 1637॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. त्वं शुद्धं सिद्धं जिनदेवं, आज पूजने आया हूँ।
पवित्र करिए मेरे मन को, यही भावना लाया हूँ॥ 1638॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. किं कर्त्तव्यं ना कर्त्तव्यं, कुछ भी समझ न पाता हूँ।
यही समझने नाथ आपकी, चरण-शरण में आता हूँ॥ 1639॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'किं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. वास करो आओ मम उर में, सूना है मम हृदय प्रभो।
आप बिना निष्फल है नरभव, सार्थक करिए आज विभो॥ 1640॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. क्षयोपशम ज्ञानी भी पूजे, क्षायिक ज्ञानी जिनवर को।
अष्ट द्रव्य ले मैं भी पूजूँ, तीन योग से प्रभुवर को॥ 1641॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. रसना रटती रहे नाम प्रभु, जीवन के अन्तिम पल में।
यही भक्त की नम्र प्रार्थना, बसे रहो मम चेतन में॥ 1642॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. प्रवचन सुन करके प्रभुवर का, श्रोता निज में खो जाते।
पर से सब सम्बन्ध तोड़कर, मात्र आपके हो जाते॥ 1643॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. कृपा वीतरागी नहीं करते, फिर भी भक्त शरण आते।
बिन मांगे वे नाथ आपसे, मनवाञ्छित फल पा जाते॥ 1644॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. तिरे स्वयं भवसागर से प्रभु, भविकजनों को तिरा रहे।
भूली भटकी आत्माओं को, राह मुक्ति की दिखा रहे॥ 1645॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. रसास्वाद ले शुद्ध गुणों का, प्रभु प्रतिपल आनन्दित हैं।
देव मनुज मुनि गणधर से प्रभु, मन वच तन से वन्दित हैं॥ 1646॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. प्राप्य पन्थ है नाथ तिहारा, मैं भी शिवमग चल पाऊँ।
यही भाव है सिद्धालय में, जाकर शाश्वत बस जाऊँ॥ 1647॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. लिखने से लखना अच्छा है, कब निज आतम को लख लूँ।
अशुभ तजूँ अब शुभ में रहकर, शुद्ध दशा अनुभव कर लूँ॥ 1648॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. कोऽपि स्तुति करे तव गुण की, उसका जग में यश फैले।
कर्मोदय में घबराये ना, भव-वारिधि से वह तैरे॥ 1649॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पिस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. त्वम् अव्ययं अक्षय सुखधारी, मोक्षमार्ग के नेता हैं।
सदा काल आनन्दित प्रभु जी, इन्द्रिय मन के जेता हैं॥ 1650॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. मीन तड़पती नीर बिना ज्यों, भक्त आप बिन तड़प रहा।
नाथ बना लो निज सम मुझको, यही हृदय मम चाह रहा॥ 1651॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. शत-शत नमन करूँ भावों से, शत दुष्कर्म विखण्डन हो।
पार्श्वनाथ प्रभुवर स्वीकारो, भक्तों के अभिनन्दन को॥ 1652॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. अखण्ड अक्षय सुख को पाने, अर्चन करने आया हूँ।
हृदय थाल में भरकर स्वामी, भावाक्षत मैं लाया हूँ॥ 1653॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'अ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. ज्ञानबाग में आप विचरते, कभी नहीं थकते स्वामी।
नन्त चतुष्टय गुण के धारी, नमन करूँ अन्तर्यामी॥ 1654॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज्ञा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. नव जीवन ही मिला मुझे जब, वीतराग छवि को निरखा।
बार-बार जिनदर्शन करने, मेरा अन्तर्मन तड़पा॥ 1655॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. वन भी मधुवन-सा लगता है, जहाँ आप प्रभु राज रहे।
बिना किए कुछ नाथ आप ही, सर्व अमङ्गल टाल रहे॥ 1656॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. नित्य वन्दना करूँ भाव से, नशे पाप विधि का बन्धन।
जड़ धन दौलत कुछ ना चाहूँ, चाहूँ मुक्तीमहल गमन॥ 1657॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. पितु[1] को सुत ज्यों अपना माने, भक्त तुम्हें सब कुछ माने।
बहुत काल से खड़ा द्वार पर, अविनाशी शिवसुख पाने॥ 1658॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. सर्व चराचर पदार्थ जाने, अतः आप सर्वज्ञ हुए।
निज शुद्धात्म तत्त्व को जाने, अतः आप आत्मज्ञ हुए॥ 1659॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. दैव योग से मुझे आपकी, भक्ति का सौभाग्य मिला।
पुण्य सातिशय बन्ध हुआ औ, पाप कर्म का बन्ध टला॥ 1660॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दै' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. वर्तमान के तीर्थङ्कर हो, तीन योग से अर्चित हो।
मनुष्य की क्या बात करें हम, ऋषि मुनि से भी वन्दित हो॥ 1661॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. कर्मोदय में समता धारूँ, यही भावना पूर्ण करो।
मात्र आपसे आश रखूँ प्रभो, सब विकार मम दूर करो॥ 1662॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. थका बहुत भव-भव में भटका, आज शरण तव मैं आया।
दर्श मात्र से लगा मुझे यों, शाश्वत शान्ति स्थल पाया॥ 1663॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. किञ्चित् भी सुख मिला नहीं प्रभु, मुझको पर जड़ द्रव्यों से।
जिनवाणी से पता पूछकर, आया हूँ तव चरणों में॥ 1664॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ञ्चि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. देव-देवियाँ आप शरण में, आकर भक्ति करते हैं।
मनुष्य बन वे मुनि पद पाकर, अनुपम मुक्ती वरते हैं॥ 1665॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. पिता

42. वसु द्रव्यों से पूजन करना, कितना अच्छा लगता है।
तरह-तरह के पदार्थ खाकर, अब यह मन अकुलाता है॥ 1666॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. ज्ञाता-दृष्टा सर्व लोक के, फिर भी निज में लीन रहे।
अज्ञ स्वयं को भी ना जाने, फिर भी जड़ धन लीन रहे॥ 1667॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज्ञा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. धनं सुतं कुछ काम न आते, पाप उदय आ जाने पर।
अघ नश जाते तत्क्षण ही प्रभु, दर्श आपके पाने पर॥ 1668॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. त्वमेव नेता हे अक्ष जेता, कर्म विजेता तुम्हें नमूँ।
नाम रटन में सुख मिलता है, अतः पार्श्वप्रभु नाम जपूँ॥ 1669॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. त्वयि मयि करके ही मैं प्रभु जी, निजानुभव ना कर पाया।
पराधीन सब विकार तजने, आप शरण में हूँ आया॥ 1670॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. स्फुरायमान होता है मनवा, रोम-रोम पुलकित होते।
आप छवि का सुमरन करके, पाप कर्म पल में धुलते॥ 1671॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्फु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. रत्नवृष्टि तब हुई धरा पर, जब दिवि से आ जन्म लिया।
अज्ञ जनों को सदुपदेश दे, प्रभुवर ने सद्धर्म दिया॥ 1672॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. तिर्यक्[1] गति के दुख से बचकर, मनुज गति अब पाई है।
प्रभो आपके दर्शन से ही, स्वातम की सुध आई है॥ 1673॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. विश्वख्यात हे पार्श्व जिनेश्वर, सिद्धालय में आप रहें।
यहाँ अर्चना करते-करते, मन में सुख की धार बहे॥ 1674॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'विश्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. तिर्यञ्च

51. वक्त पता ना चलता जब मैं, प्रभु भक्ति में रमता हूँ।
सार्थक हुए वही पल मेरे, यही सोचता रहता हूँ॥ 1675॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. विपदा बनती महा सम्पदा, जो निष्ठा से नाम जपे।
यही भावना अन्त समय तक, मम जिह्वा प्रभु नाम रटे॥ 1676॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. काष्ठ समान कर्म सब जलकर, ध्यानाग्नि से नष्ट हुए।
शुद्ध आत्म अनुभव रस पीकर, पार्श्वप्रभु जी तृप्त हुए॥ 1677॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'का' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. सहस्र नामों से मैं पूजूँ, सहस्र कष्ट मिटाने को।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाया, प्रभुवर चरण चढ़ाने को॥ 1678॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. हे पारस जिनदेव मुझे इन, श्री चरणों में आश्रय दो।
नन्त काल से दुख ही पाया, अब वसु कर्मों का लय हो॥ 1679॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. ऋतुः वसन्त करे आह्लादित, कोयल भी तब कूक रही।
वीतराग मूरत लख प्रभु की, भक्त कोकिला कुहक रही॥ 1680॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तुः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

यहाँ विरोधाभास स्तुति को, अलंकार में गुरु करते।
वन्दनीय श्री पार्श्वप्रभु को, अर्घ्य चढ़ा पद में नमते॥30॥

ॐ ह्रीं श्रीं विस्मयनीयमूर्तये क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

श्लोक नं॰ 31

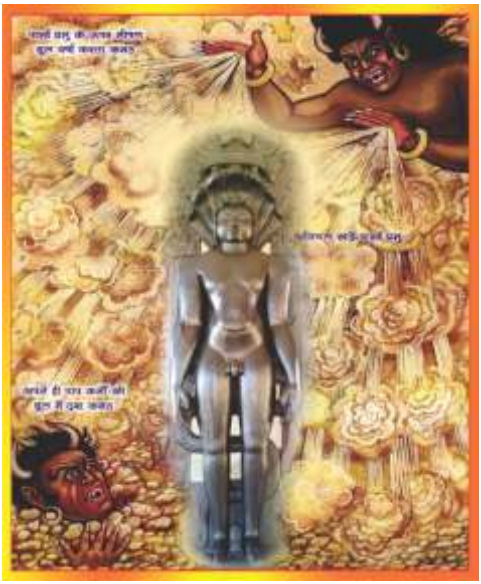

कमठ का धूलि उपसर्ग व्यर्थ

प्राग्भार-संभृत-नभांसि रजांसि रोषा-
दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि।
छायापि तैस्तव न नाथ हता हताशो
ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा॥ 31॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज – कहाँ गए चक्री...)

दुष्ट कमठ ने पूर्व वैर वश धूल उड़ाई तेज।
सारे नभ में व्याप्त हो गई गगन हुआ निस्तेज॥
लेकिन अतिशय हुआ यहाँ वह कमठ हताश हुआ।
इक कण भी प्रभु के तन की छाया को नहीं छुआ॥
वह बेचारा स्वयं कर्मरज से ही जकड़ गया।
प्रभु सूरज पर धूल फेंकने का फल प्राप्त किया॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 31॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं।

क्ष्वेलर्द्धीन् विश्वजन्तूनां, प्रोपकारादिकारिणः।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्वेलौषधर्द्धिप्राप्तेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

चाल-शेर

1. **प्राग**भाग शिवधरा पे नाथ आप विराजे।
शाश्वत अनन्त गुण समूह आपमें राजे॥
श्री पार्श्वनाथ की करूँ मैं नित्य अर्चना।
हो जाऊँ कर्म मुक्त यही नाथ प्रार्थना॥1681॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्राग्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **भा**रत की वसुधा है बड़ी पुण्यशालिनी।
प्रभु आपकी भक्ति है शीघ्र कर्म नाशिनी॥ श्री०॥1682॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **र**हिए प्रभु जी शाश्वता मम हृदय वेदि पर।
दिखला दो मोक्ष की डगर हे पार्श्व जिनेश्वर॥ श्री०॥ 1683॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **सम्**बन्ध किया पर से दुःख भोगता रहा।
जिनराज आप सन्निधि सम सौख्य है कहाँ॥ श्री०॥ 1684॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **भृ**ङ्गार आदि अष्ट द्रव्य माङ्गलीक हैं।
भक्तों के दुःख कष्ट नाश के प्रतीक हैं॥ श्री०॥ 1685॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **त**त्त्वों का दे उपदेश ज्ञान आपने दिया।
मिथ्यात्वीजन को समकिती प्रभु ने बना लिया॥ श्री०॥ 1686॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **न**वनीत के समान आपका हृदय कमल।
करुणा दया की धार बहे आपमें अविरल॥ श्री०॥ 1687॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. लाभान्तराय कर्म मुक्त आप हो गए।
फिर भी सु-भव्य जीव ज्ञान लाभ पा गए॥
श्री पार्श्वनाथ की करूँ मैं नित्य अर्चना।
हो जाऊँ कर्म मुक्त यही नाथ प्रार्थना॥1688॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. सिद्धि की भावना से नाथ द्वार आ गया।
पाई समीपता तो भक्त धन्य हो गया॥ श्री०॥ 1689॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. रमणीय समवसरण देख मन कहे यही।
होगी वो कैसी सिद्धशिला आठवी मही॥ श्री०॥ 1690॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. मनुजान्[1] भक्त जीव को प्रभु का ही सहारा।
जो पा गए शरण मिला भवसिन्धु किनारा॥ श्री०॥ 1691॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. सिद्धान्त का रहस्य आप जान चुके हैं।
प्रभु हो गए विशुद्ध सिद्धधाम रुके हैं॥ श्री०॥ 1692॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. रोशन हुआ जगत तुम्हीं से प्राप्त ज्ञान से।
भगवान हुए भव्य जीव आप ध्यान से॥ श्री०॥ 1693॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. भाषा अनक्षरी थी आप दिव्यध्वनि में।
ओंकारमय वचन सुने ऋषि और मुनि ने॥ श्री०॥ 1694॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'षा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. दुत्कारता है मन मेरा जब राग-द्वेष हो।
यह भावना है नाथ प्राप्त सिद्धदेश हो॥ श्री०॥ 1695॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दुत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. मनुष्यों को

16. थावर औ त्रस में जन्म लिया नन्त बार ही।
अब पाऊँ आप भक्ती से मैं मुक्ति द्वार ही॥
श्री पार्श्वनाथ की करूँ मैं नित्य अर्चना।
हो जाऊँ कर्म मुक्त यही नाथ प्रार्थना॥1696॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'था' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. पिछले भवों में कर्म बाँध भोग अब रहा।
धर साम्य भाव कर सकूँ संवर व निर्जरा॥ श्री०॥1697॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. तार्किक भी शान्त हो गए प्रभु के समीप आ।
क्योंकि प्रभु का दिव्य तेज ही सशक्त था॥ श्री०॥ 1698॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. नियमित करे जो पूजन वो पूज्य बने हैं।
आराधना करे वही आराध्य हुए हैं॥ श्री०॥ 1699॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. कलिकाल में भी अर्चना का भाव हो रहा।
वह पुण्यशाली बद्ध पाप कर्म धो रहा॥ श्री०॥ 1700॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. मन मग्न है जिस भक्त का प्रभु के ध्यान में।
भगवान है भविष्य का वही महान है॥ श्री०॥ 1701॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. पैठे जो ज्ञान की गुफा में पार वे हुए।
निज सिद्धमहल के वही सम्राट् हो गए॥ श्री०॥ 1702॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ठे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. नयनाभिराम आपकी छवि मुझे लगी।
चिर मोह महा नींद से मम चेतना जगी॥ श्री०॥ 1703॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. शरणागतों के कष्ट सहज नष्ट हो रहे।
जो भी स्वयं को वीतराग गुण में खो रहे॥
श्री पार्श्वनाथ की करूँ मैं नित्य अर्चना।
हो जाऊँ कर्म मुक्त यही नाथ प्रार्थना॥1704॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. बैठे हैं भक्त द्वार नाथ दर्श दीजिए।
कर्मों की आँधियों को प्रभो दूर कीजिए॥ श्री०॥ 1705॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ठे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. नश्वर पदार्थ की न भक्त चाह रखे है।
जिन-भक्ति रस को भाव से ही नित्य चखे है॥ श्री०॥ 1706॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. यादों में आपकी मैं नाथ खो रहा सदा।
प्रभु पार्श्व का सुमरन ही मेरी सत्य सम्पदा॥ श्री०॥ 1707॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. निर्लेप हो जिनेन्द्र अष्ट कर्म मुक्त हो।
निष्काम निराबाध नन्त सौख्य युक्त हो॥ श्री०॥ 1708॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. छाया घना तमस प्रभु जी दूर कीजिए।
हे नाथ पूर्णज्ञान से भरपूर कीजिए॥ श्री०॥ 1709॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'छा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. याचक खड़ा है द्वार पे निज सम बनाइए।
संसार विषय भोग मुझे अब ना चाहिए॥ श्री०॥ 1710॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. पिघला दो मोह के गिरि को प्रार्थना यही।
पाऊँ मैं शीघ्र मोक्ष की सु-शाश्वता मही॥ श्री०॥ 1711॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. तैरूँ मैं नाथ कैसे जगत-सिन्धु है अपार।
नैया के खिवैया हो आप पार्श्व निर्विकार॥
श्री पार्श्वनाथ की करूँ मैं नित्य अर्चना।
हो जाऊँ कर्म मुक्त यही नाथ प्रार्थना॥1712॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तै' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. स्तव लिखूँ मैं कैसे आपका हे पार्श्व जिन।
ना शब्द मेरे पास गाऊँ गुण मैं रात-दिन॥ श्री०॥ 1713॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. वर्षों से नित पुकारता है भक्त आपका।
आ जाओ मम हृदय में ये ही भाव दास का॥ श्री०॥ 1714॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. नर इन्द्र सुर ऋषि मुनि भी आपको ध्यायें।
कर आपका ही ध्यान सर्व कर्म नशायें॥ श्री०॥ 1715॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. नागिन व नाग का प्रभु उद्धार किया है।
जो आ गया शरण उन्हें भव पार किया है॥ श्री०॥ 1716॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. थकता नहीं है मन कभी करके प्रभु गुणगान।
होते हैं बन्ध ढीले करके प्रभु का ध्यान॥ श्री०॥ 1717॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. हरदम रहे सुमरन प्रभु जी प्रार्थना यही।
संसार भोग की करूँ मैं याचना नहीं॥ श्री०॥ 1718॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. तारण-तरण हे पार्श्वनाथ तारिए मुझे।
भूला हुआ हूँ मार्ग को दिखलाइए मुझे॥ श्री०॥ 1719॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. हस्तावलम्ब दीजिए कहीं डूब न जाऊँ।
पाकर प्रभु-सा मीत कहो कष्ट क्यों पाऊँ॥ श्री०॥ 1720॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. ताली बजा के भक्त सभी भक्ति कर रहे।
पल-पल सभी वे मुक्ती के समीप आ रहे॥
श्री पार्श्वनाथ की करूँ मैं नित्य अर्चना।
हो जाऊँ कर्म मुक्त यही नाथ प्रार्थना॥1721॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. शोभित हो नन्त गुण से जिनवर महान हो।
हे पार्श्वनाथ आप ही भक्तों की शान हो॥ श्री०॥ 1722॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. मैं ग्रस्त हूँ भव रोग से जिनवर बचाइए।
प्रभु दिव्य-वचन औषधि मुझको पिलाइए॥ श्री०॥ 1723॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग्रस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. तस्मै श्री पार्श्व जिनवराय भाव से नमूँ।
कर जाप आप नाम का भवताप से बचूँ॥श्री०॥ 1724॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. त्वम् भक्त की हर श्वास-श्वास में बसे हुए।
पाकर प्रभु जी आपको हम धन्य हो गए॥ श्री०॥ 1725॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. मीठे प्रभु के बैन[1] को दिन-रैन मैं ध्याऊँ।
करके निजानुभव को शिव सौख्य मैं पाऊँ॥ श्री०॥ 1726॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. अभिषेक देख आत्म में होती प्रसन्नता।
संसार देह भोग की जानी असारता॥ श्री०॥ 1727॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. रवि औ शशि भी आपकी आराधना करें।
चारों निकायी देव नित्य अर्चना करें॥ श्री०॥ 1728॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. यतियों के आप नायक ज्ञायक हो सर्व के।
हे धर्म के सु-नेता नाशक हो कर्म के॥ श्री०॥ 1729॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. वचन

50. मेरु समान आप हो अकंप पार्श्वनाथ।
जोड़ूँ मैं हाथ आप चर्ण में नवाऊँ माथ॥
श्री पार्श्वनाथ की करूँ मैं नित्य अर्चना।
हो जाऊँ कर्म मुक्त नाथ यही प्रार्थना॥1730॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. वसुधा है वह पवित्र जहाँ आप राजते।
इक में अनन्त सिद्ध प्रभु नित्य शोभते॥ श्री०॥ 1731॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. परमेष्ठी पद में श्रेष्ठ सिद्धपद को पा लिया।
जिसने भी लिया नाम वही पार हो गया॥ श्री०॥ 1732॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. रंजायमान हो नहीं परद्रव्य से प्रभो।
हो वीतराग वीत द्वेष ज्ञानघन विभो॥ श्री०॥ 1733॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. दुर्जेय मोह शत्रु को जीता है आपने।
वह देख आपको लगा थर-थर ही काँपने॥ श्री०॥ 1734॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. राजा हो तीन लोक के पर मान नहीं है।
प्रभु वीतराग देव की पहचान यही है॥ श्री०॥ 1735॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. आत्मा की अनुभूति ही नर भव का सार है।
चारित्रवान हो रहा भवसिन्धु पार है॥ श्री०॥ 1736॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

धूलि उड़ा उपसर्ग किया व्यर्थ कमठ ने।
प्रभु तन की छाँव को न छुआ एक भी कण ने॥
श्री पार्श्वनाथ की करूँ मैं नित्य अर्चना।
पूर्णार्घ्य चढ़ाकर करूँ मैं शुभाराधना॥31॥

ॐ ह्रीं श्रीं कमठोत्थापितधूल्युपद्रवजिताय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

श्लोक नं॰ 32

कमठ का जल उपसर्ग

यद्गर्जदूर्जित - घनौघमदभ्र - भीम-
भ्रश्यत्तडिन् मुसल-मांसल-घोरधारम्।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तर - वारिदध्रे
तेनैव तस्य जिन दुस्तर-वारिकृत्यम्॥ 32॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

उमड़-उमड़ कर गरजे बादल बिजली चमकाई।
मूसल जैसी धार कमठ ने प्रभु पर बरसाई॥
घोर किया उपसर्ग प्रभु पर क्या बिगाड़ पाया।
अपने हाथों से अपने मस्तक पर वार किया॥
द्वेष भाव से आत्म गुणों का करता रहा विनाश।
प्रभु पर ही उपसर्ग करे जो भव-भव पावे त्रास॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 32॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं।

जल्लर्द्धीन् मलतोऽशेष, दुष्टव्याधिक्षयङ्करान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं जल्लौषधर्द्धिप्राप्तेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

अडिल्ल छन्द

1. **यद् देवाधिदेव कहें वही सत्य है।**
क्योंकि प्रभु जी वीतराग गुण युक्त हैं॥
पार्श्वप्रभु की अर्चना सुखकारी है।
विघ्न और बाधाएँ मिटती सारी हैं॥ 1737॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यद्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **गर्व नहीं करता सम्यक्त्वी देह पर।**
निजातमा को जानता वह अविनश्वर॥ पार्श्व०॥ 1738॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **जन्म-मरण का नाश किया प्रभु आपने।**
जिनगुण पाने भक्त खड़ा तव सामने॥ पार्श्व०॥ 1739॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **यदूर्ध्व लोक बसे हैं सात राजू पर।**
लगता है मम आत्म में बसते जिनवर॥ पार्श्व०॥ 1740॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दूर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **जित इन्द्रिय जितमना पार्श्व जिनराज जी।**
भक्ति में लगते हैं प्रभुवर पास ही॥ पार्श्व०॥ 1741॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **तन मन वचनों से कर लूँ आराधना।**
फल चाहूँ मैं हो कर्मों का बन्ध ना॥ पार्श्व०॥ 1742॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **घमण्ड से होती है बुद्धी मन्द ही।**
हुए आप भगवान मान को तजकर ही॥ पार्श्व०॥ 1743॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'घ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. नौका संयम की पा भवदधि तैरते।
प्रभु नाम की माला जो जन फेरते॥
पार्श्वप्रभु की अर्चना सुखकारी है।
विघ्न और बाधाएँ मिटती सारी हैं॥ 1744॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नौ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. घटा भक्ति की ज्ञान नभ में घिर आई।
स्वातम में परमानन्दी बूँदें छाईं॥ पार्श्व०॥ 1745॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'घ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. महायशस्वी तेजस्वी हैं पार्श्व जिन।
नयनों से निरखूँ तव मूरत रात-दिन॥ पार्श्व०॥ 1746॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. दयासिन्धु मुझ पर भी तनिक दया करो।
भक्त अरज मम हृदय कक्ष आया करो॥ पार्श्व०॥ 1747॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. भ्रम से अब तक ब्रह्म स्वरूप दिखा नहीं।
निजानन्द चिन्मय रस नाथ चखा नहीं॥ पार्श्व०॥ 1748॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. भीषण कर्म तपन से भगवन् जल रहा।
भव सन्ताप मिटा दो तव दर पर खड़ा॥ पार्श्व०॥ 1749॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. महान करुणावान प्रभो करुणा करो।
विभाव भावों की दुविधा बाधा हरो॥ पार्श्व०॥ 1750॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. भ्रमण किया भव-वन में बहुत थका प्रभो।
दुर्लभता से आकर द्वार रुका विभो॥ पार्श्व०॥ 1751॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. दृश्य नहीं कुछ जग में लखने योग्य है।
प्रभु कहते ज्ञाता-दृष्टा तू स्वयं है॥
पार्श्वप्रभु की अर्चना सुखकारी है।
विघ्न और बाधाएँ मिटती सारी हैं॥ 1752॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. उत्तम द्रव्य लाया उत्तम भाव से।
शीतलता पाता हूँ भक्ति छाँव से॥ पार्श्व०॥ 1753॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. तडिन्[1] महा भयानक गिरती है नभ से।
किन्तु डिगे न श्रीजिनवर अपने तप से॥ पार्श्व०॥ 1754॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'डिन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. मुनि मुद्रा को अगले भव में पा सकूँ।
यही भाव है प्रभुवर शिवपुर जा सकूँ॥ पार्श्व०॥ 1755॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. समकित ज्ञान चरित का लक्ष्य बना लिया।
पथ-निर्देशक प्रभुवर तुमको मान लिया॥ पार्श्व०॥ 1756॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. लखकर जिनवर की छवि अति आनन्द है।
है विश्वास बनूँगा अब अरहन्त मैं॥ पार्श्व०॥ 1757॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. मान्य जगत में वीतराग जिनधर्म है।
कर्म नाशकर दिलवाता शिवशर्म ये॥ पार्श्व०॥ 1758॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. सरिता ज्यों सिन्धु तक बहती रहती है।
भक्त आत्मा भगवत् पद को पाती है॥ पार्श्व०॥ 1759॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. बिजली

24. लक्ष्य बनाया अब मैंने शिवधाम का।
जाप जपूँ मैं प्रभु आपके नाम का॥
पार्श्वप्रभु की अर्चना सुखकारी है।
विघ्न और बाधाएँ मिटती सारी हैं॥ 1760॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. घोर-घोर उपसर्ग सहा जिन आपने।
पहुँच गए शाश्वत सिद्धालय धाम में ॥ पार्श्व०॥ 1761॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'घो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. रस गन्धादिक पुद्गल के आकर्षण में।
प्रभु बचा लो भटक रहा इस भव-वन में॥ पार्श्व०॥ 1762॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. धारा ज्ञान की अविरल बहती प्रभु में।
कर्मधार में डूब रहा हूँ जिनवर मैं॥ पार्श्व०॥ 1763॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. रम्य रूप इस दुनिया का आकर्षण है।
किन्तु भक्त का जीवन प्रभु को अर्पण है॥ पार्श्व०॥ 1764॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. दैत्य मानव आदिक प्रभु के दर आते।
शान्त छवि लख वे सम्यग्दर्शन पाते॥ पार्श्व०॥ 1765॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दैत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. ध्येय बनाऊँ मोक्ष का जिन दर्श कर।
करूँ अर्चना श्रद्धा पूर्वक हर्ष धर॥ पार्श्व०॥ 1766॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ये' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. नरक पशु सुर मनुज हुआ कई बार मैं।
शुद्ध सिद्ध गति पा जाऊँ जिनराज मैं॥ पार्श्व०॥ 1767॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. मुक्ति के स्वामी प्रभुवर की जय होवे।
नाथ आपकी भक्ति से अघ क्षय होवे॥
पार्श्वप्रभु की अर्चना सुखकारी है।
विघ्न और बाधाएँ मिटती सारी हैं॥ 1768॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मुक्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. तजकर सर्व विभाव आप शिव पा गए।
विधान कर प्रभुवर के हम गुण गा रहे॥ पार्श्व०॥ 1769॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. मरकत मणि सम अशोक तरु के पत्र हैं।
तरु नीचे ही राजे श्री जिनराज हैं॥ पार्श्व०॥ 1770॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. थकता नहीं कभी मन प्रभु की भक्ति से।
क्योंकि भक्त को नेह हुआ शिव बस्ती से॥ पार्श्व०॥ 1771॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. दुर्गम है सिद्धि के मार्ग को पाना।
मोक्षपथ पर चलकर मुक्ती को वरना॥ पार्श्व०॥ 1772॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. अस्त होता सूरज प्रातः फिर आता।
प्रभु कहते हैं दुख के बाद सुख पाता॥ पार्श्व०॥ 1773॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. रसास्वाद प्रभु नन्त गुणों का कर रहे।
हम संसारी कर्मों का फल चख रहे॥ पार्श्व०॥ 1774॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. वामानन्दन को वन्दन मन से करूँ।
भव-वारिधि से इक या दो भव में तिरूँ॥ पार्श्व०॥ 1775॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. रिश्ता भक्त का भगवन् से सच्चा है।
क्योंकि अन्तर्मन में पूर्ण श्रद्धा है॥ पार्श्व०॥ 1776॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. दर्पण से भी विमल हैं प्रभु दिव्यतम।
हर लेते हैं पल में अन्तर मोह तम॥
पार्श्वप्रभु की अर्चना सुखकारी है।
विघ्न और बाधाएँ मिटती सारी हैं॥ 1777॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. द्धे जिनवचनों को उर में धार लूँ।
प्रभो ध्यान से शीघ्र भवोदधि तार लूँ॥ पार्श्व०॥ 1778॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध्रे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. तेज आपका देख कर्म भागे सभी।
पहुँच गए हो नाथ आप मुक्ती मही॥ पार्श्व०॥ 1779॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. नैगम नय से मेरा भी संकल्प है।
आप धाम को पाना ही इक लक्ष्य है॥ पार्श्व०॥ 1780॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नै' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. वतन आपका जग से अति निराला है।
शुद्धातम का भरा अनन्त उजाला है॥ पार्श्व०॥ 1781॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. तन्द्रा तजकर प्रातः प्रभु का नाम लूँ।
कहा प्रभु ने निश्चय से निष्काम हूँ॥ पार्श्व०॥ 1782॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. रहस्य कर्मों का मैं जान ना पाया।
पल-पल बदले कर्म छलिया की माया॥ पार्श्व०॥ 1783॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. जिओ और जीने दो प्रभुवर ने कहा।
परम अहिंसा धर्म का यह सूत्र रहा॥ पार्श्व०॥ 1784॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. नत हूँ तव चरणों में बारम्बार मैं।
प्रभु सुमरन पर्याप्त है भव तारने॥ पार्श्व०॥ 1785॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. दुर्निवार दुष्कर्मों का आतंक ये।
कर्म जीतकर हुए प्रभु शिवकन्त हैं॥
पार्श्वप्रभु की अर्चना सुखकारी है।
विघ्न और बाधाएँ मिटती सारी हैं॥ 1786॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. प्रशस्त भावों से प्रभु की पूजा करूँ।
श्रद्धा डोरी में जिनगुण गूँथा करूँ॥ पार्श्व०॥ 1787॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. रग-रग में मम बसा प्रभु का नाम है।
आप नाम से होती सुबह व शाम है॥ पार्श्व०॥ 1788॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. वाञ्छित फल दातार कहा है आपको।
दूर कीजिए नाथ कर्म सन्ताप को॥ पार्श्व०॥ 1789॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. रिझा सकूँ मैं रूठे निज सौभाग्य को।
प्रभु भक्ति कर पाऊँ मुक्ति मार्ग को॥ पार्श्व०॥ 1790॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. कृत्य कर लिए सर्व प्रभु हितकार हैं।
नाथ आप ही मम जीवन आधार हैं॥ पार्श्व०॥ 1791॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कृत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. सत्यं शिवं सुन्दरं पारस जिनरायी।
मेरे मन के भगवन् आप अतिशायी॥ पार्श्व०॥1792॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

मूसल जैसी धार बिजली चमकाई।
किन्तु ध्यान में किञ्चित् कमी नहीं आई॥
पार्श्वप्रभु की अर्चना सुखकारी है।
अनर्घ्य पद की भावना मन भायी है॥ 32॥

ॐ ह्रीं श्रीं कमठकृतजलधारोपसर्गनिवारकाय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।